**पेरिस, फ्रांस  में माननीय अध्यक्ष महोदय का भारतीय समुदाय को संबोधन**

———

देवियो और सज्जनो,

मुझे आज आपके बीच आकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। घर से दूर रह रहे अपने उन लोगों से मिलना और बातचीत करना हमेशा प्रसन्नता का विषय रहा है, जिन्होंने दुनियाँ में अपनी अलग पहचान बनाई है और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में भिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त की है। प्रवासी भारतीय, दोनों देशों और वहाँ के नागरिकों के बीच बेहतर आपसी समझ और सहयोग विकसित करने में बहुत सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। हमें आपकी उत्कृष्ट उपलब्धियों और इस देश में आपके द्वारा किए जा रहे बहुआयामी योगदान पर गर्व है।

फ्रांस के साथ भारत के संबंध कई शताब्दियों पुराने हैं जब फ्रांसीसी यात्री भारत की  धरती पर आए और उन्होने अपने अनुभवों के बारे में लिखा। फ्रेंकोइस बर्नियर यहाँ आने वाले सर्वप्रथम यात्रियों में से एक थे, जो सत्रहवीं शताब्दी में भारत आए और जिन्होंने वास्तव में मुगल सम्राट अकबर के चिकित्सक के रूप में कार्य किया था।

मुझे आपको  यह बताते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय संसदीय ग्रंथालय, जो भारत के सबसे बड़े पुस्तकालयों में से एक है, को 1671 ई॰ में मुद्रित उनकी पुस्तक "द हिस्ट्री ऑफ द लेट रिवोल्यूशन ऑफ द एम्पायर ऑफ द ग्रेट मुगल", के संरक्षण का गौरव प्राप्त है। संयोग से, यह वास्तव में हमारे संग्रह की सबसे प्राचीन पुस्तक है।

देवियो और सज्जनो, पेरिस सदियों से विचारों, कलाओं और सुंदरता का केंद्र बिंदु रहा है। 200 वर्ष से भी पहले फ्रांसीसी क्रांति के दौरान, समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे के विचारों से पूरे विश्व समुदाय में क्रांति आई थी!

इन विचारों का उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी की दुनिया पर गहरा प्रभाव पड़ा। क्या आप जानते हैं कि मैडम भीकाजी कामा, श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे अन्य हमारे कुछ प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेताओं ने पेरिस में कई वर्ष बिताए और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए कई यूरोपीय देशों का समर्थन प्राप्त किया। "पेरिस इंडियन सोसाइटी", जिसे मैडम भीकाजी कामा द्वारा सह-स्थापित किया गया था, विदेशी भूमि पर सबसे बड़े भारतीय संगठनों में से एक बन गया।

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने  का उत्सव मनाते हुए, इस अवसर पर हम इस सपने को साकार करने में योगदान देने वाले प्रत्येक व्यक्ति का स्मरण करते हैं और उन्हें सम्मान देते हैं।  इस संदर्भ में, मुझे उन भारतीय सैनिकों की भी याद आ रही है जिन्होंने मित्र देशों की सेनाओं की ओर से फ्रांसीसी धरती पर प्रथम विश्व युद्ध के दौरान संघर्ष किया था और मैं न्यू चपैल इंडियन मेमोरियल का भी आभारी हूं जो युद्ध में उनके द्वारा दिये गए बलिदानों की स्मृति में समारोह आयोजित करता है।

साथियों, पेरिस का सौंदर्य लंबे समय से हमारे कलाकारों को प्रेरणा देता रहा है। आप में से कुछ लोगों को भारत में बनी प्रसिद्ध फिल्म 'एन इवनिंग इन पेरिस' भी याद होगी। पेरिस कला, संग्रहालयों और फैशन का केंद्र रहा है। अमृता शेरगिल, अकबर पदमसी, सैयद हैदर रजा जैसे हमारे कुछ प्रसिद्ध कलाकारों ने पेरिस से प्रशिक्षण प्राप्त किया और यहां कुछ बहुत ही रचनात्मक वर्ष बिताए हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भारतीय मूल के एक लाख से अधिक लोगों ने फ्रांस को अपना घर बना लिया है।

भारत और फ्रांस के बीच घनिष्ठ सहभागिता रही है और हमारा परस्पर सहयोग असैन्य परमाणु ऊर्जा, रक्षा, साइबर सुरक्षा, डिजिटल प्रौद्योगिकियों से लेकर स्वास्थ्य और विशेष रूप से वर्ष 2020 की वैश्विक महामारी के कठिनतम दौर में पर्यावरण के क्षेत्र तक विकसित हुआ है । भारत पर्यावरण के संरक्षण के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है और इसके लिए किए जा रहे वैश्विक प्रयासों में एक सक्रिय भागीदार रहा है।

आपको यह जानकर गर्व होगा कि हम नवीकरणीय ऊर्जा की स्थापित क्षमता में दुनिया में चौथे स्थान पर हैं। भारत और फ्रांस सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए एक दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ 2015 में सीओपी 21 के अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के भी सह-संस्थापक हैं जिसके अंतर्गत सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने की उनकी दृढ़ प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है और इस साल के आरंभ में, भारत महासागरों की रक्षा के लिए महासागर ब्रेस्ट प्रतिबद्धता का हस्ताक्षरकर्ता भी बन गया है। हमारे मनीषी पूर्वजों ने हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' का ज्ञान दिया है, जो संपूर्ण विश्व को एक परिवार की तरह मानता है। जब हम वैश्विक प्रदूषण के स्तर के बारे में बात करते हैं तो यह कहावत हमें बिल्कुल सत्य जान पड़ता है।

हालांकि भारत, विश्व की 17 प्रतिशत आबादी के साथ, वैश्विक स्तर पर केवल 7 प्रतिशत **$CO_2$** उत्सर्जन के लिए जिम्मेवार है, हम 2030 तक अपनी अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को 45 प्रतिशत से अधिक और 2070 तक शून्य करने के लिए प्रतिबद्ध हैं !

देवियों और सज्जनो, भारत दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है, जिसमें 15-29 वर्ष के आयु वर्ग के युवा कुल आबादी का 27.5 प्रतिशत हिस्सा है। उनकी क्षमता को अधिकतम विकास करने की दृष्टि से, भारत बेहतर स्वास्थ्य, पोषण, बेहतर शिक्षा, रोजगार के लिए कौशल और खेलों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। भारत सरकार का ध्यान 'खेलो इंडिया' और योग पर केंद्रित है, जो हमारे युवाओं में अनुशासन, बेहतर स्वास्थ्य, टीम भावना, रणनीतिक और विश्लेषणात्मक सोच के विकास, नेतृत्व कौशल, लक्ष्य निर्धारण को विकसित करने के लिए की गई पहलें हैं। आपने हाल ही में संपन्न राष्ट्रमंडल खेलों में देखा होगा जहां भारतीय एथलीटों ने शानदार प्रदर्शन किया और यह हमारे लिए गर्व की बात है। कुश्ती, भारोत्तोलन, बैडमिंटन आदि उन जैसे खेलों में ख्याति अर्जित करने के अतिरिक्त जो हमारा मजबूत पक्ष है।

कुछ अन्य आयोजनों जैसे स्टीपलचेज़, दौड़ना, ऊंची कूद, भाला फेंक आदि में उत्कृष्ट प्रदर्शन और उनमें पहली बार पदक जीतना भारत सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न योजनाओं जैसे टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) और सेना खेल संस्थान पुणे, नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्थान, पटियाला जैसे कई विशेष संस्थानों में प्रशिक्षण का परिणाम है।

यह स्वीकार्य है कि स्टार्ट अप किसी भी देश में विकास के इंजन हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने इस दिशा में निरंतर प्रयास किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स की संख्या 2016 में 471 से कई गुणा बढ़कर 2022 में 72,993 हो गई है। उभरती प्रौद्योगिकियों से संबंधित क्षेत्रों जैसे इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी), रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, एनालिटिक्स इत्यादि में 4,500 से अधिक स्टार्टअप्स को मान्यता दी गई है।

देवियो और सज्जनो, भारत के संदर्भ में चर्चा के लिए बहुत सी विषय हैं, किन्तु समय सीमित है। अतएव, मैं महात्मा गांधी द्वारा 5 दिसंबर 1931 को गोलमेज सम्मेलन लंदन से लौटते समय पेरिस में एक जनसभा को संबोधित करते हुए उल्लेखित शब्दों को याद करना

चाहता हूँ : "आप में से जो पेरिस और यूरोप के अन्य हिस्सों में रह रहे हैं, मेरी अपील  है कि आप हमेशा दुनिया को वह सब कुछ प्रदान करने का प्रयास करें जो भारत और उसके हित  में सबसे अच्छा है।"

मैं आपके भविष्य के प्रयासों में आप सभी की सफलता की कामना करता हूं।

शुक्रिया ।